आत्म निवेदन

सर्वप्रथम परम् पिता परमेश्वर के चरण कमलों को सादर नमन करते हुए यह शोध प्रबन्ध समर्पित करती हूँ, जिनकी असीम कृपा दृष्टि से यह कार्य सम्पन्न हो सका। प्रकृत शोध प्रबन्ध जिसमें वैदिक वाङ्मय व प्रबन्धन विज्ञान जैसे भिन्न प्रतीत होने वाले विषयों के मध्य अर्न्तवैयक्तिक सम्बन्ध प्रतिस्थापित किया जाना एक उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य है जिसे पूज्य गुरूदेव डॉ. केदारनाथ शुक्ल के मार्गदर्शन के अभाव में पूर्णता की ओर ले जाना संभव न था। परम आदरणीय पूज्य गुरूजी की मैं हृदय से आभारी हूँ, जिनके आशीर्वाद व अनुग्रह से यह अकादमिक कार्य पूर्णता को प्राप्त हो सका है।

मैं शत्–शत् नमन व कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ, ''प्रबन्ध गुरू'' सह निर्देशक प्रो. (डॉ) नागेश्वर राव, पूर्व निदेशक एवम् संकायाध्यक्ष प्रबन्ध संकाय, पं.ज.ने.व्य.प्र.संस्थान विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन, सम्प्रति कुलपति राजर्षि टंडन मुक्त विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, जिन्होंने शोध प्रबन्ध का पंक्तिशः अवलोकन कर शोध प्रबन्ध को अन्तिम स्वरूप प्रदान करने में महत्त्वपूर्ण योगदान प्रदान किया। मैं उनके चरणों में प्रणाम अर्पित करती हूँ।

वैदिक वाङ्मय की सार्वभौमिकता व सर्वव्यापकता से प्रत्येक भारतीय जनमानस भली प्रकार परिचित है। वेदों के विषय में प्रसिद्ध है कि–

एकः शब्दः सम्यग् ज्ञातः सुप्रयुक्तः

स्वर्गे मर्त्ये च कामधुक् भवति

अर्थात् अनन्त शक्तिशाली ईश्वरीय वाणी वेदों के एक ही शब्द के पूर्ण ज्ञान तथा सम्यक् प्रयोग से ऐहलौकिक एवम् पारलौकिक उभय फलों की प्राप्ति सम्भव है। वेदों में विश्व के सम्पूर्ण शास्त्र, दर्शन, विज्ञान, कलाएँ व शिक्षाएँ समाहित हैं।

प्रबन्धन एक ऐसा ज्वलन्त विषय है जिसकी प्रासंगिकता विज्ञान तथा कला दोनों क्षेत्रों में समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। प्रबन्धन के क्षेत्र में नित नवीन संकल्पनाएँ एवम् खोज प्रकाश में आ रही है। जीवन के किसी भी क्षेत्र में प्रबन्धन के महत्व को नकारा नहीं जा सकता है।

बाल्यकाल से ही अपने पूज्य स्व. दादाजी श्री शम्भूदयालजी चौबे को सूर्य देवता को अर्ध्य देते हुए,पूजा अर्चना तथा संध्यावंदन करते हुए, प्रत्येक नियमित कार्य नियत समय पर करते हुए देखकर नियमित शास्त्रोक्त दिनचर्या के प्रति कौतूहलपूर्ण आकर्षण उत्पन्न होता था किन्तु यही जीवन प्रबन्धन है, इस तथ्य को अपने जीवनसहधर्मी डॉ. धर्मेन्द्र मेहता के सुप्रबन्धित जीवन के प्रति गाम्भीर्य तथा प्रबन्ध विज्ञान के विस्तृत ज्ञान के परिप्रेक्ष्य में ही समझ सकी। जिनके प्रोत्साहन, समर्थन एवम् सार्थक सहयोग ने मुझे मनोबल बनाए रखने व शोध के सभी चरणों में पूर्ण निष्ठा व गम्भीरता से कार्य करने तथा अपने पारिवारिक दायित्वों के निर्वहन के साथ ही अपने शोधकार्य को यथा सम्भव स्तरीय एवम् अपेक्षानुरूप बनाने हेतु प्रेरित किया।

प्रबन्धन एक ऐसी विधा है जिससे मनुष्य जीवन का प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित है। इसमें नित नवीन परिष्कृत वैज्ञानिक संकल्पनाओं का समावेश हो रहा है, किन्तु यदि प्रबन्धन की वास्तविक अवधारणाओं को समझने की अभिलाषा हो, विश्व शान्ति व समृद्धि की अपेक्षा हो तो वैदिक वाङ्मयरूपी अथाह सागर में प्रबन्धन के प्रत्येक क्षेत्र में उचित व नैतिक मार्गदर्शन व संसाधन रूपी माणिक्य उपलब्ध हैं। आवश्यकता है तो मात्र इस सागर में शोध एवम् गहन अध्ययन, मननरूपी गोता लगाकर इनकी प्राप्ति एवम् वैश्विक कल्याण एवम् समृद्धि के लिए इनका समुचित उपयोग करने की।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में वैश्विक स्तर पर वैदिक प्रबन्धकीय सिद्धान्तों का जीवन प्रबन्धन के आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक, पर्यावरणीय, धार्मिक, शिक्षा, कला, संस्कृति, व्यवसाय आदि विविध क्षेत्रों के संदर्भ में अध्ययन किया जाकर समाधान प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

गुरूजनों के सतत् मार्गदर्शन एवम् प्रोत्साहन की परिणति ही प्रस्तुत शोध प्रबन्ध के रूप में हुई है। संस्कृत अध्ययनशाला विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के विभागाध्यक्ष आचार्य डॉ. केदारनारायण जोशी, डॉ. बालकृष्ण शर्मा, निर्देशक सिन्धिया प्राच्य विद्या शोध प्रतिष्ठान, उज्जैन जगत्गुरू रामानन्द राजस्थान संस्कृत विश्व विद्यालय, जयपुर के कुलपति आचार्य डॉ. युगल किशोर मिश्र, आचार्य श्री किशोर मिश्र, सचिव महर्षि सांदिपनी राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन; प्रा. कमलेशदत्त त्रिपाठी, मनोन्नत आचार्य, काशी हिन्दू विश्व विद्यालय, वाराणसी; अध्येता संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली; संयोजक इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र (पश्चिम क्षेत्र) नई दिल्ली, आचार्य कृष्णकांत चतुर्वेदी पूर्व निदेशक, कालिदास अकादमी, अर्वाचीन संस्कृत साहित्य के आचार्य डॉ. राधा वल्लभ त्रिपाठी, कुलपति, राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, डॉ. वाचस्पति उपाध्याय, कुलपति राष्ट्रीय लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली की मैं हृदय से आभारी हूँ। आप सभी विद्वानों का प्रभावशाली व्यक्तित्व

एवम् कृतित्व सदैव मुझे प्रेरणा प्रदान करता है। इस नाम माला के संस्कृत मनीषियों के व्याख्यानों, चर्चाओं, साक्षात्कारों ने मुझ यथेष्ट मार्ग दर्शन प्रदान किया है।

सिन्धिया प्राच्य विद्या शोध प्रतिष्ठान के संकाय सदस्य डॉ. सीतांशु रथ, अधिकारीगण सर्वश्री डॉ. कैलाशनारायण शर्मा, डॉ. कृष्णकांत जोशी, डॉ. चक्रधर उपाध्याय एवम् अन्य सभी संकाय सदस्यों के प्रति मैं अपना आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग व मार्गदर्शन से यह दुरूह सा प्रतीत होने वाला कार्य सम्भव हो सका।

गुरूजन डॉ. रश्मिकान्त व्यास, आचार्य द्वय डॉ. सोमनाथ नेने, प्रो.विन्ध्येश्वरी प्रसाद मिश्र, काशी हिन्दू विश्व विद्यालय, वाराणसी, डॉ. मुरली मनोहर पाठक, आचार्य गोरखपुर विश्व विद्यालय, डॉ. राजराजेश्वर मूसलगाँवकर प्राध्यापक संस्कृत अध्ययनशाला विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन, प्रो. (डॉ) रवीन्द्र कुमार जैन, आचार्य एवम् अध्यक्ष प्रबन्ध अध्ययन बोर्ड विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन एवम् भू. पू. कुलपति बरकतउल्लाह वि. वि. भोपाल, प्रो. डॉ. दीपक गुप्ता, डॉ. कामरान सुल्तान, संकायाध्यक्ष पं. ज. ने. व्य. प्र. सं. वि. वि. उज्जैन, डॉ. डी. डी. बेंदिया, डॉ. सचिन राय, प्रो. डी. डी. मिश्रा, श्री राकेश खोती, डॉ. संध्या सक्सेना एवम् समस्त संकाय सदस्य पं. ज. ने. व्य. प्र. सं. विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन के प्रति मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करती हूँ, प्रबन्धन विषय की तकनीकि सूक्ष्मताओं को समझने में आप सभी का सहयोग अविस्मरणीय है।

मैं सिन्धिया प्राच्य विद्या शोध प्रतिष्ठान एवं जीवाजीराव केन्द्रीय पुस्तकालय विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के डॉ. कौशिक बोस, पुस्तकालयाध्यक्ष, श्री बाबूलालजी व्यास एवं समस्त स्टाफ के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिनके माध्यम से संस्कृत साहित्य व प्रबन्ध साहित्य की पाठ्य/शोध सामग्री अवलोकनार्थ एवं संदर्भ अध्ययन हेतु प्राप्त करने का अवसर प्राप्त हुआ।

प्रो. रामराजेश मिश्र, कुलपति, रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय जबलपुर तथा प्रो. श्रीमती प्रेमलता चुटैल, अधिष्ठाता कला संकाय एवम् विभागाध्यक्ष हिन्दी अध्ययनशाला विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन का प्रेरणादायी सहयोग मुझे सदैव उत्साहित करता रहा।

आभार परम्परा के तारतम्य में साक्षात् सरस्वती स्वरूपा मेरी सासूमाँ सौ. पू. शारदा मेहता एवं श्वसुर परमपूज्य डॉ. नरेन्द्र कुमार मेहताजी की मैं सदैव ऋणी रहूँगी जिनका पुत्रीवत् स्नेह, प्रोत्साहन तथा शोध कार्य में सहयोग अविस्मरणीय है।

मैं आभार व्यक्त करती हूँ मेरे देवर डॉ. नवीन मेहता का जिन्हें मैने अपने अग्रज के रूप में प्रतिक्षण अपने सम्मुख उपस्थित पाया। शोधकार्य के प्रत्येक सोपान पर उन्होंने मुझे तकनीकि सहायता प्रदान की। जिनके प्रति आभार को शब्दों में वर्णित करना असम्भव सा प्रतीत हो रहा है।

मैं कोटि–कोटि धन्यवाद प्रेषित करती हूँ अपने आत्मीय श्रीमती उमा मेहता, श्री राजेश मेहता, श्रीमती शोभिता मेहता, श्री अशोक मेहता, डॉ. श्रीमती विनीता मेहता, श्री प्रशान्त चौबे, श्रीमती इला चौबे को जिन्होंने अपना अमूल्य सहयोग, मार्गदर्शन तथा बहुमूल्य समय प्रदान कर मुझे अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों से मुक्त कर इस शोध प्रबन्ध को पूर्णता की ओर ले जाने में सहायता व प्रोत्साहन प्रदान किया। धन्यवाद की पात्र है मेरी ज्येष्ठ पुत्री चि. स्वर्णिमा मेहता जो अपने अध्ययन के साथ–साथ मुझे सहयोग करने को सर्वदा तत्पर रही, चि. रोशी मेहता, चि. महिका मेहता, चि. राजनिधि मेहता, चि. सुनिधि मेहता की बालसुलभ चर्याएँ एवम् असीम निश्च्छल स्नेह सदैव स्फूर्ति व आनन्ददायिनी रही। शोध कार्य को पूर्णता प्रदान करने के लिए मैं भ्रातृ तुल्य संगणक टंकणकर्ता श्री कमलेश वाधवानीजी एवं श्री विक्रम दवे की आभारी हूँ।

मैं प्रणाम अर्पित करती हूँ गुरुमाता द्वय श्रीमती सुनीता शुक्ल एवम् डॉ. श्रीमती मयूरा राव के चरण कमलों में जिनके नामोल्लेख के अभाव में आभार परम्परा की यह श्रङ्खला अपूर्ण सी है।

अन्त में मैं प्रणाम निवेदित करती हूँ अपने पूज्य पिताजी श्री प्रेमनारायण चौबे एवम् माताजी श्रीमती साधना चौबे को जिनका वात्सल्यपूर्ण आशीष सदैव मेरा मार्ग प्रकाशित करता रहा है।

आत्म निवेदन के समापन में चराचर जगत के अधिपति भगवान श्री महाकालेश्वर के चरण कमलों में यह शोध समर्पित करती हूँ तथा समस्त त्रुटियों के लिए क्षमा प्रार्थी हूँ।

शोधकर्त्री

श्रीमती प्रीति मेहता